M.L.S. College Sarisab-Pahi, Madhubani
(L.N.M.U., Darbhanga)
Department of Philosophy
Dr. SARITA KUSHWAHA

B.A. I^st (Hon.+Sub+Gen.)
Indian Philosophy
न्याय दर्शन (8)

न्यायदर्शन[8] हेत्वाभास: अनुमान का दोष
(Fallacies of Inference)

हमने अपने पूर्व के व्याख्यान में देखा कि -

- न्याय के अनुसार 'अनुमान (Inference)' एक प्रमाण है और इससे हमें प्रमा की प्राप्ति होती है।
- अनुमान व्याप्ति पर निर्भर रहता है। व्याप्ति (vyapti), हेतु और साध्य के मध्य का विशेष संबंध है।
- अनुमान से प्रमा की प्राप्ति हो इसके लिए व्याप्ति सही हो।
- व्याप्ति सही हो इसके लिए हेतु का सही होना जरूरी है। क्योंकि हम मात्र हेतु का ही प्रत्यक्ष (Perception) करते हैं।

हेतु के लक्षण (Characters of Hetu)

हेतु में पाँच लक्षण बताये गए हैं-

1. पक्षधर्मत्व :- हेतु को पक्ष में उपस्थित होना चाहिए। इसे पक्षधर्मत्व कहते हैं। जैसे- पर्वत पर धुआँ।
2. सपक्षसत्वम् :- हेतु का सभी सपक्ष दृष्टांतों अर्थात् उदाहरणों (examples) में उपस्थित रहना ही सपक्षसत्वम् कहलाता है। जैसे- चूल्हा.
3. विपक्षासत्वम् :- जिन दृष्टांतों में साध्य का अभाव हो उनमें हेतु का भी अभाव होना विपक्षासत्वम् है। जैसे-तालाब।

Scanned with CamScanner

4. अबाधितविषयत्व :- हेतु का ऐसी बातों / वस्तुओं से संबंध न होना जो दृष्ट-विरुद्ध या तर्क विरुद्ध हों। जैसे- आग की शीतलता से संबंध।

5. असत्प्रतिपक्षत्व :- हेतु अपने साध्य को ही सिद्ध करे न कि उसके विरोधी (साध्य भाभाव) को, असत्प्रतिपक्षत्व कहलाता है।

अनुमान करते समय जब, हेतु वास्तव में हेतु नही होता परन्तु हेतु जैसा प्रतीति या आभास होता है तो अनुमान में दोष उत्पन्न हो जाता है। इसी दोष को हेत्वाभास कहते हैं।

जैसे: जहां जहां आग है, वहां वहां धुआँ है।

हेत्वाभास = हेतु + आभास

⇒ हेतु का आभास ही हेत्वाभास है।
⇒ जो हेतु की तरह प्रतीत होता है परंतु हेतु लक्षण से शून्य होता है वही हेत्वाभास है।

गंगेश उपाध्याय द्वारा परिभाषा - "जो दोष ज्ञाय मान होते हुए अनुमिति का प्रतिरोध करे वही हेत्वाभास है।"

हेत्वाभास के प्रकार (Types of Hetwabhasa)

हेत्वाभास 5 प्रकार का होता है -

1. सव्यभिचार (Irregular Middle)
2. विरुद्ध (Contradictory Middle)
3. सत्प्रतिपक्ष / प्रकरणसम (Inferentially Contradicted Middle)
4. असिद्ध (Unproved Middle)
5. बाधित या कालातीत (Non-inferentially Contradicted Middle)

1. सव्यभिचार हेत्वाभास

अनुमान मे यह दोष तब उत्पन्न होता है जब हेतु का संबंध साध्य के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं (साध्याभाव) से भी

Scanned with CamScanner

रहता है। ऐसे हेतु के साथ साध्य की व्याप्ति अनैकान्तिक होती है।

जैसे:-

सभी जनेऊ पहनने वाले ब्राह्मण हैं।
योगदत्त जनेऊ पहनता है।
अतः योगदत्त ब्राह्मण है।

हेतु (Middle Term) = जनेऊ
साध्य (Major Term) = ब्राह्मण
पक्ष (Minor Term) = योगदत्त

सव्यभिचार हेत्वाभास 3 प्रकार का होता है-
1. साधारण 2. असाधारण 3. अनुपसंहारी

सपक्ष उदाहरण: इन उदाहरणों में हेतु और साध्य दोनों का साथ रहना ज्ञात होता है। जैसे- भट्टी, जहाँ धुआँ, वहां आग।
विपक्ष उदाहरण: इन उदाहरणों में हेतु और साध्य दोनों का एक साथ अभाव रहता है। जैसे- तालाब, जहाँ आग नहीं, वहाँ धुआँ नहीं।

1. साधारण सव्यभिचारी हेत्वाभास

जब हेतु पक्ष, सपक्ष और विपक्ष तीनों में पाया जाता है तो वहाँ, साधारण सव्यभिचारी हेत्वाभास होता है।

जैसे-

सभी ज्ञात पदार्थ अग्नियुक्त हैं।
पर्वत ज्ञात पदार्थ है।
अतः पर्वत अग्नियुक्त है।

हेतु = ज्ञात पदार्थ
साध्य = अग्नियुक्तता
पक्ष = पर्वत
सपक्ष = भट्टी
विपक्ष = तालाब

2. असाधारण सव्यभिचारी हेत्वाभास

जब हेतु पक्ष में तो पाया जाए लेकिन न सपक्ष दृष्टांतों में पाया जाए और न ही विपक्ष दृष्टांतों में, तो वहाँ असाधारण सव्यभिचारी हेत्वाभास कहलाता है।

Scanned with CamScanner

जैसे—

"शब्द नित्य है, क्योंकि वह सुनाई देता है।"

व्याख्या: आत्मा नित्य है, सुनाई नहीं देती
घड़ा अनित्य है, सुनाई नहीं देता

साध्य = नित्यता
हेतु = सुनाई देना
पक्ष = शब्द
सपक्ष = आत्मा (नित्य)
विपक्ष = घड़ा (अनित्य)

3. अनुपसंहारी सव्यभिचारी हेत्वाभास

जब हेतु अपने पक्ष में तो पाया जाता है परंतु इसके पक्ष इतना व्यापक होता है कि इसके सपक्ष और विपक्ष दृष्टांत (examples) मिलते ही नहीं। अनुमान के लिए सपक्ष और विपक्ष दोनों प्रकार के दृष्टांत मिलना आवश्यक होता है।

जैसे- सभी पदार्थ नित्य हैं क्योंकि वे प्रमेय हैं।

साध्य = नित्यता
पक्ष = सभी पदार्थ
हेतु = प्रमेय

अन्य हेत्वाभास के प्रकारों की चर्चा हम अपने अगले व्याख्यान में करेंगे।

Sarita Kushwaha
13/04/2020

Scanned with CamScanner